NEERAJ®

प्रयोजनमूलक हिंदी

B.H.D.C.-114

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sanjay Jain, M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

प्रयोजनमूलक हिंदी

Question Paper—June–2024 (Solved) 1

Question Paper—December–2023 (Solved) 1-2

Question Paper—June–2023 (Solved) 1

Question Paper—December–2022 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप

1. सामान्य हिंदी, साहित्यिक हिंदी तथा प्रयोजनमूलक हिंदी 1

2. प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रयुक्तियाँ और व्यवहार क्षेत्र 13

3. प्रयोजनमूलक हिंदी : वाक्य संरचना 20

4. प्रयोजनमूलक हिंदी : पारिभाषिक शब्दावली 27

5. संविधान में हिंदी और राजभाषा अधिनियम 36

6. राजभाषा : स्वरूप एवं कार्यान्वयन 45

कार्यालयी हिंदी

7. कार्यालयी हिंदी की भाषिक प्रकृति 52

8. हिंदी की प्रशासनिक शब्दावली और अभिव्यक्ति 59

9. प्रशासनिक पत्राचार के विविध रूप 67

S.No. Chapterwise Reference Book Page

10. टिप्पण लेखन 76

11. मसौदा लेखन 82

12. बैठकें और प्रतिवेदन 91

13. संक्षेपण/सार लेखन 99

विविध अनुशासनों एवं क्षेत्रों में हिंदी का स्वरूप

14. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली 107

15. पर्याय, शब्द निर्माण, समानार्थी शब्द निर्धारण और प्रयोग 116

16. समाचार लेखन और हिंदी 124

17. विज्ञापन और हिंदी 133

18. वाणिज्य में हिंदी 143

19. बैंकिंग प्रणाली में हिंदी 150

20. फिल्म समीक्षा की हिंदी 158

21. विधि/न्याय के क्षेत्र में हिंदी 170

22. फैशन जगत में हिंदी 176

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

प्रयोजनमूलक हिंदी

B.H.D.C.-114

समय : 3 घण्टे | अधिकतम अंक : 100

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. जनसंचार के क्षेत्र में आई क्रांति का हिन्दी भाषा पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-8, प्रश्न 16

प्रश्न 2. बैंकिंग हिंदी में प्रयुक्त होने वाली वाक्य संरचनाओं की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-25, प्रश्न 11

प्रश्न 3. पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की क्या आवश्यकता है? विस्तार से लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-31, प्रश्न 3

प्रश्न 4. संविधान में हिंदी की विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-37, 'संविधान में हिंदी'

प्रश्न 5. सरकारी कामकाज के लिए भारत के विभिन्न भाषाई क्षेत्रों को किन-किन वर्गों में विभाजित किया गया है? उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-41, प्रश्न 7

प्रश्न 6. राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा संपर्क भाषा से क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-45, 'राजभाषा, राष्ट्रभाषा तथा संपर्क भाषा'

प्रश्न 7. सार लेखन की आवश्यकता क्यों और कब पड़ती है? तर्कसंगत विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-54, प्रश्न 5 तथा अध्याय-13, पृष्ठ-101, प्रश्न 2, पृष्ठ-103, प्रश्न 9

प्रश्न 8. समाचार का अर्थ क्या है? उसके प्रकारों को लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-124, 'समाचार से तात्पर्य' पृष्ठ-125, 'समाचार के प्रकार'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

प्रयोजनमूलक हिंदी

B.H.D.C.-114

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. प्रयोजनमूलक हिंदी के रूवरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप'

प्रश्न 2. प्रयोजनमूलक हिंदी के सन्दर्भ में पारिभाषिक शब्द का महत्त्व बताते हुए दस पारिभाषिक शब्द अकारादिक्रम से लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-27, 'पारिभाषिक शब्दावली निर्माण एवं विकास की आवश्यकता', पृष्ठ-30, 'वर्णक्रम अथवा अकारादिक्रम का विलेषण'

प्रश्न 3. राजभाषा अधिनियम, 1976 को विस्तारपूर्वक लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-38, 'राजभाषा नियम, 1976', पृष्ठ-41, प्रश्न 8

प्रश्न 4. राजभाषा से संबंधित विभिन्न समितियों के कार्यों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-38, 'राजभाषा आयोग तथा राजभाषा समितियां', पृष्ठ-42, प्रश्न 9 तथा अध्याय-6, पृष्ठ-46, 'विभिन्न समितियां'

प्रश्न 5. कार्यालयी हिंदी को सहज और स्पष्ट किस तरह बनाया जा सकता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-54, 'भाषा की सहजता की आवश्यकता', पृष्ठ-55, प्रश्न 12

प्रश्न 6. पत्राचार से क्या तात्पर्य है? प्रशासनिक पत्र के किन्हीं दो प्रारूपों को तैयार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-67, 'पत्राचार से तात्पर्य' पृष्ठ-68, 'प्रशासनिक पत्र-प्रयोग एवं प्रारूपगत विशेषताएं'

प्रश्न 7. विज्ञापन भाषा के प्रमुख सहयोगी उपादानों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-136, 'विज्ञापन की भाषा'

प्रश्न 8. कार्यवृत्त और कार्यसूची का संबंध स्पष्ट करते हुए एक कार्यवृत्त का नमूना तैयार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-91, 'सरकारी बैठकों का आयोजन', पृष्ठ-92, 'कार्यसूची और कार्यवृत्त के कुछ नमूने, कार्यवृत्त का प्रारूप'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) राष्ट्रभाषा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-47, प्रश्न 2 (ख)

(ख) राजभाषा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-47, प्रश्न 2 (क)

(ग) संचार

उत्तर–संचार एक व्यक्ति, समूह या स्थान से दूसरे व्यक्ति को लिखित, बोलकर या किसी ऐसे माध्यम का उपयोग करके सूचना का क्रियाशील हस्तांतरण है, जो समझने का साधन प्रदान करता है। प्रत्येक संचार में कम-से-कम एक प्रेषक, एक प्राप्तकर्ता और एक संदेश होता है। प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक संदेश का संचरण कई चीजों से प्रभावित होने का जोखिम उठाता है, क्योंकि संचार लोगों के परस्पर क्रिया करने के तरीके को प्रभावित करता है। इनमें स्थान, संवाद करने के लिए उपयोग किया जाने वाला माध्यम, सांस्कृतिक स्थिति और भावनाएँ शामिल हैं। हालांकि संचार लोगों को परस्पर क्रिया करने और जीवन के विभिन्न पहलुओं को साझा करने में मदद करता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

प्रयोजनमूलक हिंदी

प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप

सामान्य हिंदी, साहित्यिक हिंदी तथा प्रयोजनमूलक हिंदी

1

परिचय

किसी भी भाषा के महत्त्व को उसके प्रयोग, विस्तार और व्यापक भूमिकाओं के साथ जोड़कर देखना चाहिए। हिंदी हमारे देश की राजभाषा है, उच्च शिक्षा का माध्यम है और राष्ट्रीय स्तर पर सम्पर्क भाषा भी है। ये भूमिकाएँ हर विकासशील राष्ट्र की हर प्रमुख भाषा को निभानी पड़ती हैं। जो भाषा जितनी 'अविकसित' होगी, उसकी भूमिका उतनी ही कम होगी। ऐसी भाषा क्षेत्रीय स्तर पर मात्र बोलचाल के लिए तो काम आ सकती है, परंतु अन्य अनेक भाषागत दायित्वों को निभाने का कार्य नहीं कर सकती,लेकिन हिंदी का प्रयोग हम अपने जीवन में एक साथ कितने ही क्षेत्रों में करते हैं। जब हम किसी मित्र-मंडली में बैठकर गपशप कर रहे होते हैं, तो जिस हिंदी भाषा का प्रयोग हम करते हैं, वह साधारण बोलचाल की भाषा होती है, लेकिन जब उसी हिंदी भाषा में हम सर्जनात्मक लेखन कार्य करने बैठते हैं, तो एक भिन्न शैली का प्रयोग करते हैं। यह भाषा का साहित्यिक रूप है। यहाँ पर अलंकार, शब्द-शक्तियों आदि के माध्यम से सौंदर्य पैदा किया जा सकता है, यहाँ भाषा का संवेदनापूर्ण होना आवश्यक हो जाता है। भाषा के इस रूप को हम पाठ्यपुस्तकों तथा अन्य साहित्यिक कृतियों में देख सकते हैं। हिंदी यहाँ साहित्यिक भाषा है, साथ ही यह आधुनिक प्रयोजनों की भी भाषा है। उसमें ज्ञान-विज्ञान के साहित्य के साथ-साथ पर्याप्त पारिभाषिक शब्दों का निर्माण भी हुआ है। यह विकसित भाषा है, क्योंकि इसमें कम्प्यूटर पर काम करने तक की सुविधा है। भाषा के उस रूप को, जिसका प्रयोग व्यक्ति किसी खास प्रयोजन के लिए करता है, उसे 'प्रयोजनमूलक भाषा' कहा जाता है। इसी संदर्भ में 'प्रयोजनमूलक हिंदी' से तात्पर्य है–विशिष्ट उद्देश्य को लेकर चलने वाली हिंदी अर्थात् हिंदी के वे विविध रूप, जिनका प्रयोग कार्यालयों में, बैंकों में, जनसंचार माध्यमों में या व्यावसायिक क्षेत्रों आदि में होता है। हिंदी का यह रूप सामान्य एवं साहित्यिक हिंदी से निश्चित रूप से अलग होगा। इसमें औपचारिकता अधिक होती है, भावप्रधान शैली का अभाव होता है एवं इसमें बोलचाल की भाषा की तुलना में विस्तार भी कम होता है तथा यह कम शब्दों में स्पष्ट कथन की माँग करती है।

इस प्रकार यह तय है कि हिंदी के विविध रूप प्रयोग में लाए जाते हैं और अपने प्रत्येक रूप में हिंदी अत्यंत सफल रही है। हिंदी भाषा के इन विविध रूपों ने अपने-अपने ढंग से भारत के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अध्याय का विहंगावलोकन

हिंदी के विविध रूप

हिंदी के मुख्यत: तीन रूप हैं–

सामान्य हिंदी

वह बोलचाल में प्रयुक्त होने वाली हिंदी, जिसका प्रयोग कोई भी व्यक्ति अपने परिवेश से करना सीखता है। बचपन में जब बच्चा बोलना सीखता है, तो वह उसी भाषा का अनुकरण करता है, जो उसके परिवार के लोग प्रयोग करते हैं। इस अनुकरण के लिए न तो उस भाषा के लिपि-ज्ञान की आवश्यकता होती है, न व्याकरण का ज्ञान अपेक्षित होता है। प्राय: भाषा के दो रूप देखे जाते हैं–औपचारिक व अनौपचारिक। केवल अनुकरण से सीखी हुई भाषा अधिकांशत: अनौपचारिक होती है, क्योंकि वह आम बोलचाल की भाषा है, जिसका प्रयोग व्यक्ति दैनिक कार्यों के लिए करता है। इसे सीखने के लिए मनुष्य को कोई विशिष्ट प्रयास नहीं करना पड़ता। इस प्रकार किसी से अनौपचारिक बातचीत करते हुए हम जिस हिंदी का प्रयोग करते हैं, वही सामान्य हिंदी है। शहरों में तो सामान्य हिंदी में एक नई शैली विकसित हो गई है, जो अंग्रेजी मिश्रित है। उसमें व्याकरण, संरचना आदि के स्तर पर हमें कई प्रकार के विचलन मिल सकते हैं। वैसे तो अंग्रेजी के अनेक शब्दों को हिंदी में स्वीकार कर लिया गया है, परंतु हिंदी बोलते हुए हिंदी के कम और अंग्रेजी के अधिक शब्दों का प्रयोग आजकल फैशन की तरह देखा जाता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है–'आज मैं स्टेशन अपने फादर को सी-ऑफ करने अपनी मदर के साथ गया था' अथवा 'आजकल कॉलेज में क्लासिस नहीं हो रहीं, क्योंकि सभी टीचर्स स्ट्राइक पर हैं।' अथवा 'पेपर्स जल्दी

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

लाओ, सिगनेचर्स करके अभी हेड ऑफिस भिजवाना है। थोड़ा भी डिले हो गया तो एक्सप्लेनेशन कॉल हो जाएगी'।

सामान्य अथवा बोलचाल की हिंदी के भी कई स्तर होते हैं–जब हम अपने से बड़ों से बात कर रहे होते हैं या कक्षा में अध्यापक के प्रश्न का उत्तर दे रहे होते हैं अथवा किसी सार्वजनिक स्थल पर बात कर रहे होते हैं, तो हमारी बात का ढंग कुछ अलग होता है और जब हम अपने दोस्तों से गपशप कर रहे होते हैं, तो हमारा लहजा कुछ अलग होता है।

साहित्यिक हिंदी

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जिसमें अपने युग की परम्पराओं, कार्यकलापों, संस्कृति, रीति-रिवाजों, रहन-सहन, आचार-व्यवहार, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक मर्यादाओं का स्पष्ट उल्लेख होता है। वैसे तो साहित्यिक भाषा का मुख्य आधार बोलचाल की भाषा ही होता है, किंतु साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश पाने पर वह परिष्कृत व परिमार्जित हो अपने पूर्ण रूप से कुछ भिन्न हो जाती है। उसमें एक विशिष्ट सौंदर्य, गांभीर्य की अनोखी चमक, अलंकरण की दिव्य छटा आदि का मिश्रण हो जाता है। परिणामत: यह सामान्य बोलचाल से ऊपर उठकर शिक्षित समुदाय के विचार-विमर्श का माध्यम एवं साहित्यकारों की सहभागिनी बन जाती है।

साहित्यिक भाषा कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, कविता आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं में अपना स्वरूप ग्रहण करती है। इसका सम्बन्ध हमारी सौंदर्यपरक अनुभूतियों से होता है, अत: यह पाठक के मन में सौंदर्यानुभूति जगाती है। कोई भी भाषा कितनी समृद्ध है, कितनी विकसित है तथा कितनी सशक्त है–उसका पता उस भाषा के साहित्य से लगता है। साहित्यिक हिंदी के चार विविध रूप देखे जा सकते हैं–1. संस्कृतनिष्ठ रूप, 2. अरबी-फारसी मिश्रित रूप, 3. सामान्य बोलचाल का रूप, 4. अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का रूप।

प्रयोजनमूलक हिंदी

सामान्यत: 'प्रयोजन', 'प्रयोजनमूलक' और 'प्रयोजनमूलकता' को क्रमश: अंग्रेजी के 'फंक्शन', 'फंक्शनल' तथा 'फंक्शनलिटी' का पर्याय माना जाता है। हिंदी के संदर्भ में प्रयोजनमूलक पद–'प्रयोजन' तथा 'मूलक' के योग से बना है। प्रयोजन का सम्बन्ध भाषा की प्रयोजनीयता से है और मूलक से तात्पर्य है आधारित। इस प्रकार इसे अंग्रेजी में 'फंक्शनल लैंग्वेज' कहा जाएगा। यहाँ प्रयोजन का अर्थ उन प्रयोगों से है, जो आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार भाषा को करने पड़ते हैं। विशिष्ट प्रयोजनों से संबद्ध भाषायी स्थिति को प्रयोजनमूलक और इन विशिष्ट प्रयोजनों को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली भाषा को प्रयोजनमूलक भाषा कहा जाता है।

प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप

हिंदी में आज 'प्रयोजनमूलक हिंदी' शब्द का सबसे अधिक प्रयोग हो रहा है। प्रश्न यह उठता है कि क्या भाषा का कोई रूप निष्प्रयोजनमूलक (नॉन-फंक्शनल) भी होता है? परंतु यह स्पष्ट है कि भाषा का कोई भी रूप अव्यावहारिक, प्रयोजनरहित या अनुपयोगी नहीं होता। इस विवाद से बचने के लिए कुछ विद्वानों ने इसे कामकाजी हिंदी या 'व्यावहारिक हिंदी' भी कहा। डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया उसे 'कामकाजी हिंदी' कहते हैं, तो डॉ. रामप्रसन्न नायक व्यावहारिक हिंदी कहते हैं। इसके विपरीत मोंटूरि सत्यनारायण तथा डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा उसे 'प्रयोजनमूलक' कहने के ही पक्ष में हैं। डॉ. नगेंद्र भी इसी नाम को स्वीकार करते हैं। उनका मत है, "वस्तुत: प्रयोजनमूलक हिंदी के विपरीत अगर कोई हिंदी है, तो वह आनंदमूलक हिंदी है। आनंदमूलक व्यक्ति सापेक्ष है और प्रयोजनमूलक समाजसापेक्ष। आनंद स्वकेंद्रित होता है और प्रयोजन समाज की ओर इशारा करता है। हम आनंदमूलक साहित्य के विरोधी नहीं हैं, इसलिए आनंदमूलक साहित्य के हम भी हिमायती हैं, पर सामाजिक आवश्यकताओं के संदर्भ में हम सम्प्रेषण के बुनियाद को भी अपनी नजर से ओझल नहीं करना चाहते।" डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा निष्प्रयोजन हिंदी की कल्पना को अस्वीकार करते हुए कहते हैं, "निष्प्रयोजन हिंदी कोई चीज नहीं है, लेकिन प्रयोजनमूलक विशेषण उसके व्यावहारिक पक्ष को अधिक उजागर करने के लिए प्रयुक्त किया गया।"

विद्वानों ने प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप निर्धारित करते हुए उसके विभिन्न रूपों की चर्चा की, जो निम्नलिखित हैं–

1. व्यापार से सम्बन्धित हिंदी, जिसमें मुख्यत: मंडियों की भाषा, सर्राफे के दलालों की भाषा, सट्टा बाजार की भाषा आदि।
2. कार्यालयों तथा प्रशासन सम्बन्धित भाषा।
3. ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे–संगीतशास्त्र, दर्शनशास्त्र, काव्यशास्त्र, भाषाशास्त्र, योगशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, विज्ञान तथा समाजशास्त्र के अध्ययन एवं अनुसंधान की भाषा।
4. तकनीकी हिंदी, जिसमें इंजीनियरिंग, बढ़ईगिरी, लुहार का कार्य, प्रेस, फैक्टरी, मिल आदि की तकनीकी भाषा होती है।
5. साहित्यिक हिंदी, कविता, कहानी, नाटक, निबंध आदि की भाषा।

प्रयुक्ति–हर क्षेत्र की भाषा की अपनी एक अलग विशेषता होती है। जिस भाषा का कार्यालय में प्रयोग होता है, उसका बैंकों में नहीं किया जाता। ठीक इसी तरह न्यायालय की भाषा व्यापारिक केंद्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा से अलग होती है। इस रूप में व्यवहार क्षेत्र में अंतर होने के कारण भाषा में जो अंतर आता है, उसे ही 'प्रयुक्ति' या register कहते हैं।

हिंदी के प्रकार्य

हिंदी भाषा का स्वरूप आज अत्यंत व्यापक है, जब हम इसकी विविध भूमिकाओं को देखते हैं, तो पाते हैं कि हिंदी राजभाषा, राज्यभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा सभी रूपों में सफल सिद्ध हुई है। इन भूमिकाओं से भी आगे निकलकर हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 'अंतर्राष्ट्रीय भाषा' के रूप में तेजी से विकसित हो रही है। ये सभी भूमिकाएँ मिलकर भाषा के प्रयोजनमूलक प्रकार्य का स्वरूप निश्चित करती हैं। प्रयोजनमूलक भाषा में संपर्क तथा संप्रेषण की आवश्यकता होती है और इसकी अभिव्यक्ति ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में, यथा–प्रशासन, विधि, विज्ञान, पत्रकारिता आदि प्रयोजनों के रूप में होती है। प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रणेता मेंटूरि सत्यनारायण ने हिंदी के स्वरूप एवं कार्यक्षेत्र को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जाने वाली हिंदी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है।" भाषा के दो पक्ष या प्रकार्य होते हैं। एक का संबंध हमारी सौंदर्यपरक अनुभूति का आलंबन होता है। यह आत्मकेंद्रित और आत्मसुख का उपकरण होता है। दूसरे का सम्बन्ध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति और जीवन की उस व्यवस्था से जुड़ा होता है, जो व्यक्ति के साथ रहता है और उसके

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

निमित्त जो सेवा माध्यम (सर्विस टूल) के रूप में प्रयुक्त होता है। भाषा व्यवहार का यह दूसरा पक्ष ही भाषा का प्रयोजनमूलक संदर्भ है। अत: प्रयोजनमूलक हिंदी का तात्पर्य हिंदी के उन विविध रूपों से है, जो सेवा माध्यम के रूप में सामने आते हैं। भाषा के सामान्य प्रकार्यों की अपेक्षा प्रयोजनमूलक प्रकार्य अपने में विशिष्ट होते हैं। हिंदी के सामान्य प्रकार्यों तथा प्रयोजनमूलक प्रकार्यों में कुछ मूलभूत अंतर द्रष्टव्य हैं–भाषा के प्रयोजनमूलक प्रकार्य संस्थागत होते हैं। इस दिशा में किए गए भाषा के विकास के प्रयत्न भी संस्थागत होते हैं अर्थात् बैंक सम्बन्धी शब्दावली का निर्माण कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा से नहीं कर सकता, इस कार्य को बैंक से जुड़े हुए लोग ही अपनी सुविधा और आवश्यकतानुसार करते हैं। वास्तव में संस्था द्वारा किए गए कार्य को ही मान्यता मिलती है।

प्रयोजनमूलक प्रकार्यों के संदर्भ में भाषा नीति और भाषा नियोजन को साथ लेकर चलना पड़ता है। भाषा यह तय करती है कि निर्धारित लक्ष्य (भाषा का योजनाबद्ध विकास) के लिए हमें क्या करना है और भाषा नियोजन से यह स्पष्ट होगा कि उसे क्रियान्वित कैसे करना है। प्रयोजनमूलक प्रकार्यों के सम्बन्ध में हिंदी के दो प्रमुख रूप हैं–

राजभाषा हिंदी के रूप में

सन् 1947 तक ब्रिटिश शासन के दौरान देश की राजभाषा अंग्रेजी थी। स्वतंत्र भारत में जब संविधान लागू किया गया, तब संविधान में उल्लेख था कि हिंदी, जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, इस देश की राजभाषा है। लेकिन राजभाषा के प्रकार्य के निर्वाह में हिंदी भाषा की तैयारी को देखते हुए यह भी उल्लेख था कि अंग्रेजी 1961 तक राजभाषा के रूप में पूर्ववत् काम में आती रहेगी और इस अवधि में हिंदी भाषा अपने आपको राजभाषा के दायित्व-निर्वाह के अनुकूल बनाने की तैयारी करेगी। 1963 में राजभाषा अधिनियम द्वारा हिंदी को एकमात्र राजभाषा घोषित किया गया। परंतु भारत के ही कुछ अंग्रेजी समर्थकों ने इस परिवर्तन का विरोध किया। परिणामस्वरूप 1967 में अधिनियम में संशोधन कर अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों को ही राजभाषा घोषित कर दिया गया अर्थात् आज कार्यालयी पत्राचार हिंदी और अंग्रेजी दोनों में किया जा सकता है।

राजभाषा से तात्पर्य राज्य के तीन प्रमुख अंगों की भाषा से है। ये प्रमुख अंग हैं–संसद, अदालतें और प्रशासन। इन तीन अंगों का सम्बन्ध पूरे देश से है। संसद पूरे देश के लिए कानून बनाती है और प्रदेशों के विधानमंडल अपने-अपने स्तर पर अपनी भाषा में काम करते हैं। इन सबका समन्वय करने या इसमें सामंजस्य स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि सभी विधायक निकायों के निर्णय आदि देश की राजभाषा में उपलब्ध हों। न्यायपालिकाओं को समन्वित करने के लिए यह भी आवश्यक है कि प्रदेश का सबसे बड़ा न्यायालय (उच्च न्यायालय) तथा देश का उच्चतम न्यायालय अपने समस्त कार्य देश की राजभाषा में ही करें। इसी प्रकार भारत सरकार के कार्यालय (डाक, तार-विभाग, रेल, आयकर विभाग आदि) पूरे देश में काम करते हैं। यहाँ भी आवश्यक है कि उनका काम देश की राजभाषा में हो, जिससे सम्पर्क न टूटे। इस दृष्टि से राष्ट्र के तीनों अंगों में समन्वय स्थापित करने या संपर्क कायम करने का दायित्व देश की राजभाषा पर है और यह इसका प्रमुख प्रकार्य है।

राष्ट्रभाषा हिंदी के रूप में

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। यह कश्मीर से कन्याकुमारी तक ससम्मान बोली, समझी और पढ़ी-पढ़ाई जाती है। अंतर कहीं है तो केवल इतना कि कहीं पर कम, कहीं पर ज्यादा। राष्ट्रभाषा का मसला भावनात्मकता से जुड़ा है, जिसको राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ा जाता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी ने राष्ट्रीय एकता के लिए जनसम्पर्क के प्रकार्य का निर्वाह किया। यही भाषा देश को जोड़ने वाली भाषा रही। इसे सम्पर्क भाषा का प्रकार्य माना जाता है। इस रूप में हिंदी की भूमिकाएँ हैं–

1. राजभाषा के रूप में जो पूरे देश के लिए संपर्क की कड़ी है।
2. सामान्य व्यवहार के लिए।
3. ज्ञान-विज्ञान के आदान-प्रदान के लिए।

संपर्क के इस तीसरे प्रकार को राष्ट्रभाषा माना जाता है। राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का प्रकार्य संस्थागत नहीं है। शिक्षा में त्रिभाषा-सूत्र पर बल दिया जा रहा है। स्वैच्छिक संस्थाएँ हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगी हैं। रेडियो, दूरदर्शन आदि माध्यम हिंदी के प्रसार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। साहित्य अकादमी, भारत सरकार का प्रकाशन विभाग, हिंदी अकादमी आदि वाङ्मय के विस्तार में लगे हुए हैं।

संपर्क भाषा के रूप में तीनों प्रकारों का स्वरूप भिन्न होगा। राजभाषा के रूप में हिंदी का रूप तकनीकी होगा। संपर्क भाषा हिंदी में क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव रहेगा तथा भाषा का स्तर बोलचाल का होगा।

प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप

कार्यालयी हिंदी

सरकारी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यालयों में काम-काज में प्रयुक्त होने वाली हिंदी को कार्यालयी हिंदी कहा गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसे बढ़ावा दिया गया लेकिन सरकारी कार्यालयों में आज तक जो पद्धति अपनायी जा रही है, वह अंग्रेजी शासन के समान ही है, इसलिए कार्यालय में हिंदी का प्रयोग करने के लिए अनुवाद की पर्याप्त सहायता ली जाती है। इस प्रकार कार्यालयी हिंदी के विकास में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। हम जिन तकनीकी शब्दों का कार्यालयी भाषा में प्रयोग करते हैं, उनका आम बोलचाल में प्रयोग नहीं करते, जैसे–पावती, गोपनीय, संस्तुत, विचाराधीन आदि। कार्यालयी संदर्भ में एक शब्द पूरे वाक्य का अर्थ देता है, जैसे–विचाराधीन का अर्थ है–"इस पर विचार किया जा रहा है।"

वित्त तथा वाणिज्य-व्यापार के क्षेत्र में हिंदी

व्यापार आदि के लिए हमेशा एक संपर्क भाषा की आवश्यकता पड़ती है, जो आपसी संप्रेषण में सहायक हो सके। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का व्यापार के क्षेत्र में काफी प्रयोग किया जा रहा है। इस क्षेत्र की शब्दावली तथा शैली परम्परागत है। उदाहरणत:, 'सोना उछला, चाँदी लुढ़की अथवा जीरा फिर भड़का'। यहाँ उछलना, लुढ़कना, भड़कना आदि शब्दों तथा क्रियाओं का एक सुनिश्चित अर्थ है।

विधि के क्षेत्र में हिंदी

राजभाषा का दर्जा दिए जाने के पश्चात् हिंदी को विधि एवं न्याय व्यवस्था में भी अपनाने पर विचार किया गया, जिसके लिए विधि शब्दावली का निर्माण किया गया। यद्यपि राजभाषा आयोग ने विधि के क्षेत्र में हिंदी को स्थापित करने के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, तथापि इस क्षेत्र में आज भी अंग्रेजी का बोलबाला है। वास्तव में न्यायालयों में हिंदी माध्यम से कार्य करने पर अभी गहराई से विचार नहीं किया गया, जो थोड़ा-बहुत हुआ है, उसका

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

भी कार्यान्वयन ठीक प्रकार से नहीं किया जा रहा है। इसके लिए आवश्यक है कि संपूर्ण विधि साहित्य हिंदी में उपलब्ध कराई जाये, ऐसी पत्रिकाएँ निकाली जाएँ जो उच्च तथा उच्चतम न्यायालयों के निर्णयों को हिंदी में प्रकाशित करें।

विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी

वैज्ञानिक भाषा का स्वरूप आमतौर पर विवरणात्मक होता है, क्योंकि इसमें किसी वस्तु, व्यक्ति या विषय के बारे में सूचना देना ही उद्देश्य होता है। आमतौर पर वैज्ञानिक साहित्य का हमें अनुवाद मिलता है, जो आम प्रयोग में न होने के कारण अत्यंत दुरूह होता है। वास्तव में विज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली हिंदी का स्वरूप अभी अपना स्वरूप ग्रहण कर रहा है। यद्यपि यह स्वरूप अभिधापरक होता है, फिर भी यह अपने आप में विशिष्ट होता है, जो संकेतों, चिह्नों आदि के रूप में हमारे सामने आता है।

जनसंचार के क्षेत्र में हिंदी

जनसंचार के मुख्यत: चार माध्यम हैं–1. लिखित माध्यम, 2. श्रव्य माध्यम, 3. दृश्य-श्रव्य माध्यम तथा 4. कम्प्यूटर।

हिंदी भाषा के प्रयोग की दृष्टि से ये चारों माध्यम अपने-अपने क्षेत्र में बहुत प्रगति कर रहे हैं। वर्तमान युग में इनमें से किसी एक माध्यम को प्रमुख और दूसरों को गौण नहीं माना जा सकता क्योंकि प्रत्येक माध्यम का अपना-अपना महत्त्व है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों में कौन-सा सामान्य वाक्य है और कौन साहित्यक वाक्य, उसके सामने लिखकर उत्तर दीजिए–

1. **संघर्षों से मनुष्य ने नई शक्ति पाई है.....**
2. **पसंद तो मुझे भी आ रहा है यार, पर बड़ा महंगा लग रहा है.....**
3. **शिवालिक की सूखी नीरस पहाड़ियों पर मुस्कराते हुए ये वृक्ष द्वंद्वातीत हैं, अलमस्त हैं।.....**
4. **आज गुप्त कुचक्रों से गुप्त-साम्राज्य शिथिल है।.....**
5. **नहीं सुधा, तुम्हें जाने की जरूरत नहीं और मैंने सबका ठेका नहीं ले रखा है। तू यहीं रहेगी देखते हैं कौन क्या कर लेगा।.....**

उत्तर–1. साहित्यिक, 2. सामान्य, 3. साहित्यिक, 4. साहित्यिक, 5. सामान्य।

प्रश्न 2. हाँ/नहीं पर सही का निशान लगाकर उत्तर दीजिए–

1. **सामान्य हिंदी संपर्क की भाषा है। हाँ/नहीं**
2. **साहित्यिक हिंदी का प्रयोग आम बातचीत के लिए होता है। हाँ/नहीं**
3. **प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग सर्जनात्मक रूप में होता है। हाँ/नहीं**
4. **साहित्यिक हिंदी के अनेक रूप मिलते हैं। हाँ/नहीं**
5. **सामान्य हिंदी भाषा में क्षेत्रीय भाषा, बोलियों और अंग्रेजी के शब्द भी सहज रूप में आ जाते हैं। हाँ/नहीं**
6. **प्रयोजनमूलक भाषा का आधार विभिन्न प्रयुक्तियाँ होती हैं। हाँ/नही**

उत्तर– 1. हाँ, 2. नहीं, 3. नहीं, 4. हाँ, 5. हाँ, 6. हाँ।

प्रश्न 3. प्रयोजनमूलक हिंदी से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में 'प्रयोजन' शब्द के साथ 'मूलक' उपसर्ग लगने से प्रयोजनमूलक पद बना है। प्रयोजन से तात्पर्य है उद्देश्य अथवा प्रयुक्ति (लक्ष्य)। 'मूलक' से तात्पर्य है आधारित। अत: प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य हुआ किसी विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा।

जीवन में हमारी भूमिकाएँ विभिन्न होती हैं; जैसे–पारिवारिक भूमिका, व्यावसायिक भूमिका आदि। इसी भूमिका के आधार पर हमारा भाषा-व्यवहार निर्धारित होता है। माता-पिता, संतान या पति-पत्नी इत्यादि के रूप में जो हमारा भाषा-व्यवहार होता है, वह व्यावसायिक क्षेत्र के भाषा-व्यवहार से अलग होता है अर्थात् जिस भाषा के रूप में हम अपने माता-पिता या परिवारजन से बात करते हैं, उस तरह की भाषा में हम अपने अध्यापक या सहयोगी कर्मचारी से बातचीत नहीं करते हैं। परिवारजन से हमारा भाषा-व्यवहार अनौपचारिक होता है, जबकि व्यवसाय के क्षेत्र में औपचारिक। इसी प्रकार चिकित्सालय, बैंक, राशनकार्ड कार्यालय या किसी अन्य कार्यालय में जिन लोगों से हमारा संपर्क होता है, उनकी बातचीत में औपचारिकता के साथ-साथ विशिष्ट शब्दावली का भी प्रयोग होता है। ऐसे लोग अपने बाहरी आम जीवन में इन विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग नहीं कर पाते हैं, इस प्रकार किसी व्यवसाय अथवा कार्य क्षेत्र के लोगों के द्वारा उस व्यवसाय या कार्य क्षेत्र के प्रयोजनों के लिए प्रयोग की गई भाषा प्रयोजनमूलक भाषा कहलाती है। डॉक्टर, वकील, पत्रकार, व्यापारी आदि के कार्य क्षेत्रों से संबंधित भाषा के विशिष्ट स्वरूप को प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं।

भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरूप उस भाषा के मूल रूप अर्थात् शब्द-रचना, पदावली या अन्य व्याकरणिक रूपों से भिन्न नहीं होता है, बल्कि भाषा के इस व्यापक रूप के भीतर ही विद्यमान रहता है तथा उसके विविध क्षेत्रों में प्रयोग के आधार पर निर्मित होता है। जैसे विज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त भाषा, कानून और न्याय के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली भाषा से अलग होगी।

सहज प्रयोजन के अतिरिक्त भाषा कुछ विशिष्ट प्रयोजनों का माध्यम भी बनती है और ऐसे निश्चित प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा प्रयोजनमूलक भाषा कहलाती है। इसे व्यावहारिक भाषा (Functional Language) भी कहा जाता है। प्रयोजनमूलक अथवा व्यावहारिक हिंदी एक-दूसरे का पर्याय हैं।

साहित्यपरक और बोलचाल का रूप जितना पुराना है, उतना अन्य प्रयोजनपरक रूप नहीं है, क्योंकि इसका विविध प्रयोजनों के लिए सामान्य प्रयोग अपेक्षाकृत नया है। अंतर्देशीय वाणिज्य और व्यापार की भाषा के रूप में हिंदी बहुत समय से देश की संपर्क भाषा बनी हुई थी, लेकिन आधुनिक युग में आकर उसने कई नए दायित्वों को ग्रहण किया है। ज्ञान-विज्ञान के आदान-प्रदान, राजभाषा के रूप में, भारतीय भाषाओं में पत्रकारिता के विकास, परस्पर संपर्क व सामान्य व्यवहार आदि के रूप में हिंदी भाषा ने अनेक भूमिकाएं अदा की हैं और करती आ रही है।

प्रश्न 4. सामान्य हिंदी का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता है?

उत्तर–सामान्य हिंदी सामान्य बोलचाल की हिंदी होती है, जिसका प्रयोग हम दैनिक जीवन के विविध संदर्भों में करते हैं। इसका प्रयोग सामान्य प्रयोजनों के लिए किया जाता है। इसे सीखने के लिए किसी औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसमें भाषा के मानक रूप के प्रति आग्रह नहीं होता। सामान्य हिंदी भाषा

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com